20 अलबम

सुदर्शन
(जन्म : सन् 1896 ई., निधन : सन् 1976 ई.)

सुदर्शनजी का जन्म पश्चिमी पंजाब (वर्तमान पाकिस्तान) में सियालकोट नगर में हुआ था । इन्हें बचपन से ही कहानी लिखने का शौक था । इन्होंने प्रारंभ में उर्दू में लिखना शुरू किया था, बाद में हिन्दी में लिखने लगे । इनकी पहली कहानी 'सरस्वती' नामक पत्रिका में 1920 में छपी थी। हिन्दी कहानी क्षेत्र में प्रेमचंद के बाद सुदर्शनजी का नाम लिया जाता है । इन्होंने फिल्मों के लिए भी कहानियाँ लिखीं जिन पर सफल फिल्मों का निर्माण हुआ । सुदर्शन सुमन, पारस, पनघट इनके प्रसिद्ध कहानी संग्रह हैं ।

प्रस्तुत कहानी में पंडित शादीराम और लाला सदानंद के बीच जो आर्थिक व्यवहार हुआ उसमें संबंधों को किस तरह बचाया गया, उसका मार्मिक वर्णन है । आजकल पैसों के कारण संबंधों में दरार पड़ जाती है । ऐसे समय में मानव मूल्यों का जतन करने की प्रेरणा इस कहानी से मिलती है ।

पंडित शादीराम ने ठंडी आह भरी और सोचने लगे - क्या यह ऋण कभी सिर से न उतरेगा ?

वे गरीब थे परंतु दिल के बुरे न थे । वे चाहते थे कि जिस तरह भी हो, अपने यजमान लाला सदानंद का रुपया अदा कर दें । उनके लिए एक-एक पैसा मोहर के बराबर था । अपना पेट काटकर बचाते मगर जब चार पैसे जमा हो जाते तो कोई न कोई ऐसा खर्च निकल आता था जिससे सारा रुपया उड़ जाता । शादीराम के हृदय पर बरछियाँ चल जाती थीं और वे कुछ कर न पाते थे ।

इसी तरह कई साल बीत गए । शादीराम ने पैसा-पैसा बचाकर अस्सी रुपए जोड़ लिए । उन्हें लाला सदानंद के पाँच सौ रुपये देने थे । इस अस्सी रूपए की रकम से ऋण उतारने का दिन आता प्रतीत हुआ । परंतु उनका लड़का लगातार चार महीने बीमार रहा । पैसा-पैसा करके बचाए हुए रुपए दवा-दारू में उड़ गए । पंडित शादीराम ने सिर पीट लिया । अब चारों ओर फिर अंधकार था उसमें प्रकाश की हलकी-सी किरण भी दिखाई न देती थी । उन्होंने ठंडी साँस भरी और सोचने लगे - क्या यह ऋण कभी सिर से न उतरेगा ?

लाला सदानंद अपने पुरोहित की विवशता को जानते थे । वे चाहते थे कि पंडितजी रुपये देने का प्रयत्न न करें । उन्हें इस रकम की जरा भी परवान न थी । उन्होंने इसके लिए कभी तगादा तक नहीं किया । इस बात से वे इतना डरते थे, मानो रुपए उन्हीं को देने हों ।

शादीराम के दिल में भी शांति न थी । वे सोचा करते कि ये कैसे भलेमानस हैं जो अपनी रकम के बारे में मुझसे बात तक नहीं करते ? खैर, ये कुछ नहीं कहते, सो तो ठीक है परंतु इसका तात्पर्य यह थोड़े ही है कि मैं भी निश्चित हो जाऊँ ? मेरी तरफ इनका रुपया निकलता है, मुझे देना ही चाहिए ।

उनमें लाला सदानंद के सामने सिर उठाने का साहस न था । यदि लाला सदानंद ऐसी सज्जनता न दिखलाते और शादीराम से बार-बार अपने पैसे माँगते तब शायद उनके दिल को ऐसा कष्ट न होता । हम अत्याचार का सामना सिर उठाकर कर सकते हैं परंतु भलमनसी के सामने आँखें नहीं उठतीं ।

एक दिन लाला सदानंद किसी काम से पंडित शादीराम के घर गए । वहाँ उनकी अलमारी में कई सौ बंगला, हिन्दी और अंग्रेजी की मासिक पत्रिकाएँ देखकर बोले, 'ये क्या हैं पंडितजी ?'

पंडित शादीराम ने उत्तर दिया, 'पुरानी पत्रिकाएँ हैं । बड़े भाई को पढ़ने का शौक था । वही ये पत्रिकाएँ मँगवाते थे । वे जब जीवित थे तो किसी को हाथ न लगाने देते थे । अब इन्हें कीड़े खा रहे हैं । कोई पूछता भी नहीं ।'

'रद्दी में क्यों नहीं बेच देते ?'

'इनमें चित्र हैं । जब कभी बच्चे रोने लगते हैं तो एक-आध निकालकर दे देता हूँ । इससे उनके आँसू थम जाते हैं इसलिए रद्दी में नहीं बेचता ।'

लाला सदानंद ने आगे बढ़कर कहा, 'दो-चार पत्रिकाएँ दिखाइए तो । जरा देखें, इनमें कैसे चित्र हैं ?'

पंडित शादीराम ने कुछ पत्रिकाएँ दिखाई । हर एक पत्रिका में कई सुंदर और रंगीन चित्र थे । लाला सदानंद

कुछ देर तक उलट-पलटकर देखते रहे । सहसा उनके मन में एक विचार उठा । वे बोले, 'ये चित्रकला के बढ़िया नमूने हैं । अगर किसी शौकीन को पसंद आ जाएँ तो आप हजार-दो हजार रुपए बड़ी आसानी से कमा सकते हैं ।'

पंडित शादीराम ने एक ठंडी साँस भरकर कहा, 'ऐसे भाग्य होते तो यों धक्के न खाता फिरता !'

लाला सदानंद बोले, 'एक काम करें !'

'क्या ?'

'आज बैठकर जितनी अच्छी-अच्छी तसवीरें हैं, सबको अलग छाँट लें ।'

'बहुत अच्छा ।'

'जब यह कर चुकें तो मुझे कहलवा दें ।'

'आप क्या करेंगे ?'

'मैं एक अलबम बनाऊँगा और आपकी तरफ से विज्ञापन दे दूँगा । हो सकता है, यह विज्ञापन किसी शौकीन के हाथ पड़ जाए और आप दो-चार पैसे कमा लें । तसवीरें बहुत बढ़िया हैं ।'

पंडित शादीराम को यह आशा न थी कि कोयले की खान में हीरा मिल जाएगा । घोर निराशा ने आशा के सभी द्वार बंद कर दिए थे । वे उन हतभागे लोगों में से थे जो संसार में असफल और केवल असफल रहने के लिए पैदा होते हैं । वे सोने को हाथ लगाते थे तो वह भी मिट्टी हो जाता था । वे सीधी बात भी करते थे तो उलटी पड़ती थी । उनको पक्का विश्वास था कि यह प्रयत्न भी सफल न होगा परंतु लाला सदानंद के कहने से दिनभर बैठकर तसवीरें छाँटते रहे । न उनके मन लगन थी, न उनके हृदय में चाव था, न उनके सीने में उमंग था किंतु लाला सदानंद की बात को टाल न सके । शाम को देखा, दो सौ बढ़िया चित्र जमा हो गए हैं । उस समय वे उन्हें देखकर स्वयं उछल पड़े । उनके मुख पर आनंद की आभा नाचने लगी । वे उन चित्रों की ओर इस तरह देखते मानो उनमें से हर एक दस-दस के नोट हों । बच्चों को उधर देखने तक न देते थे । वे सफलता के विचार से ही प्रसन्न हो रहे थे । यद्यपि आशा कोसों दूर थी । लाला सदानंद की दी हुई आशा उनके मस्तिष्क में निश्चय का रूप धारण कर चुकी थी । वे खुशी से झूमने लगे ।

लाला सदानंद ने चित्रों को अलबम में लगवाया और समाचार पत्रों में विज्ञापन दे दिया । अब पंडित शादीराम हर समय डाकिये की प्रतीक्षा करते रहते थे । वे रोज सोचते थे कि आज कोई चिट्ठी आएगी । दिन बीत जाता, कोई चिट्ठी न आती थी । रात को आशा, सड़क की धूल की तरह बैठ जाती थी । मगर दूसरे दिन लाला सदानंद की बातों से टूटी हुई आशा फिर जुड़ जाती थी। आशा फिर अपना चमकता हुआ मुँह दिखाकर उन्हें दरवाजे पर ला खड़ा कर देती थी । डाक का समय होता, तो वे बाजार चल पड़ते और वहाँ से डाकखाने पहुँच जाते । इसी तरह एक महीना बीत गया, कोई पत्र न आया । पंडित शादीराम बिलकुल निराश हो गए । मगर फिर भी कभी-कभी सफलता का विचार आ जाता था, जैसे अँधेरे में जुगनू चमक जाता है । जुगनू की यह चमक निराश हृदयों के लिए कैसी जीवनदायिनी, कैसी हृदयहारिणी होती है । इसके सहारे भूले हुए मुसाफ़िर मंजिल पर पहुँचने का प्रयत्न करते हैं और कुछ देर के लिए अपना दु:ख भूल जाते हैं । इस झूठी आशा के अंदर सच्चा प्रकाश नहीं होता, यह दूर के संगीत के समान मनोहर जरूर होती है । इस वर्षा की कमी दूर हो न हो परंतु इससे काली घटा का जादू कौन छीन सकता है ? पंडित शादीराम ने आशा न छोड़ी । या यों कहिए, आशा ने पंडित शादीराम को न छोड़ा । दिन गुजरते गए ।

आखिर एक दिन शादीराम के भाग्य जागे । कलकत्ते के एक मारवाड़ी सेठ ने पत्र लिखा कि अलबम भेज दो । अगर पसंद आ गया तो खरीद लिया जाएगा । मूल्य की चिंता नहीं, चीज अच्छी होनी चाहिए । यह पत्र उस करवट के समान था जो सोया हुआ आदमी जागने से पहले बदलता है और उसके बाद उठ बैठता है । यह किसी आदमी की करवट न थी, यह भाग्य की करवट थी । पंडित शादीराम दौड़े हुए सदानंद के पास पहुँचे और उन्हें पत्र दिखाकर बोले, 'आखिर आज एक पत्र आ गया है । भेज दूँ अलबम ?'

छ: महीने बीत गए ।

लाला सदानंद बीमार थे । पंडित शादीराम उनके लिए दिन-रात माला फेरा करते थे । वे न वैद्य थे, न डॉक्टर और न ही हकीम । उनकी औषधि माला फेरना ही थी और वह काम वे अपनी आत्मा की पूरी शक्ति, अपने पूरे मन से कर रहे थे । उन्हें औषधि की अपेक्षा आशीर्वाद और प्रार्थना पर अधिक भरोसा था । सोचते थे, दवा से दुआ अच्छी है ।

एक दिन लाला सदानंद चारपाई पर लेटे थे । उनके पास उनकी बूढ़ी माँ उनके दुर्बल और पीले मुँह को देख-देखकर अपनी आँखों के आँसू अंदर ही अंदर पी रही थी । थोड़ी दूरी पर एक कोने में, उनकी नवोढ़ा स्त्री घूँघट निकाले खड़ी थी और देख रही थी कि कोई काम ऐसा तो नहीं, जो रह गया हो । पास पड़ी चौकी पर पंडित शादीराम बैठे, रोगी को भगवद्गीता सुना रहे थे ।

एकाएक लाला सदानंद बेसुध हो गए । पंडितजी ने गीता छोड़ दी और उनके सिरहाने बैठ गए । स्त्री गरम दूध लाने के लिए अंदर दौड़ी और माँ घबराकर बेटे को आवाजें देने लगी । इस समय पंडितजी को लगा कि रोगी के सिरहाने के नीचे कोई चुभती हुई चीज रखी है । उन्होंने नीचे हाथ डालकर देखा तो उनके आश्चर्य की सीमा न रही । वह सख्त चीज वही अलबम था, जिसे किसी सेठ ने नहीं बल्कि स्वयं लाला सदानंद ने खरीदा था ।

पंडित शादीराम इस विचार से बहुत प्रसन्न थे कि उन्होंने सदानंद का ऋण उतार दिया मगर यह जानकर उनके हृदय को चोट-सी लगी कि ऋण उतरा नहीं अपितु पहले से दुगुना हो गया है ।

उन्होंने बेसुध यजमान के पास बैठे-बैठे एक ठंडी साँस भरी और सोचने लगे - यह ऋण मेरे सिर से क्या कभी न उतरेगा !

कुछ देर बाद लाला सदानंद को होश आया । उन्होंने पंडितजी से अलबम छीन लिया और धीरे से कहा, 'यह अलबम अब मैंने सेठ साहब से मँगवा लिया है ।'

पंडित जी जानते थे कि यजमान झूठ बोल रहे हैं परंतु वे उन्हें पहले से भी अधिक सज्जन, अधिक उपकारी और ऊँचा समझने लगे थे । वे यह न कह सके कि आप झूठ बोल रहे हैं । उनमें यह हिम्मत न थी । वे चुपचाप माला फेरने लगे ।

शब्दार्थ

ऋण कर्ज, उधार **अदा करना** चुकाना **विवशता** मजबूरी **परवाह** चिंता **हतभागे** अभागे, भाग्यहीन **आभा** चमक, जीवनदायिनी, जीवन देनेवाली **हृदयहारिणी** मन को लुभानेवाली **चिरंजीवी** बहुत समय तक जीवित रहनेवाला, पुत्र **वैद्य** आयुर्वेदिक चिकित्सक **दुआ** प्रार्थना, विनती, आशिष **बेसुध** बेहोश

मुहावरे

ठंडी आह भरना दु:खी होना **पेट काटकर बचाना** थोड़े खर्च में काम चलाना **हृदय पर बर्छियाँ चलाना** अत्यधिक चुभनेवाली बात कहना

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए :

(1) पंडित शादीराम अपना ऋण क्यों नहीं उतार पाते थे ?

(अ) वे अत्यंत गरीब थे ।

(ब) बचे हुए पैसे किसी न किसी तरह खर्च हो जाते थे ।

(क) रुपये देने की उनकी दानत ही नहीं थी ।

(ड) पैसे देने जितनी रकम इकट्ठी ही नहीं होती थी ।

(2) शादीराम पुरानी पत्रिकाएँ बेचते नहीं थे क्योंकि .....

(अ) उनकी कोई ज्यादा रकम नहीं मिल सकती थी ।

(ब) उनके भाई की अमानत थी ।

(क) उनके रोते हुए बच्चे उनमें के चित्रों को देखकर चुप हो जाते थे ।

(ड) पत्रिकाएँ उन्हें बहुत प्रिय थीं ।

(3) सदानंद के कहने पर शादीराम ने पत्रिकाओं के चित्रों का क्या किया ?

(अ) बेच दिए (ब) अलबम बनाया (क) बच्चों को बाँट दिये (ड) दीवारों पर सजा दिये

(4) पंडित शादीराम को अलबम के कितने रुपये मिले ?

(अ) एक हजार (ब) दो सौ (क) दो हजार (ड) एक सौ

(5) सदानंद का मन प्रसन्नता से नाच उठा क्योंकि .....

(अ) उन्हें अपने पैसे वापस मिल गए ।

(ब) पंडित शादीराम की उदारता और सज्जनता के कारण ।

(क) परमात्मा ने उनकी बात स्वीकार कर ली । (ड) मारवाड़ी सेठ ने अलबम खरीद लिया था ।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) पंडित शादीराम के बचाए हुए अस्सी रुपये किसमें खर्च हो गये ?

(2) पंडित शादीराम पुरानी पत्रिकाएँ क्यों नहीं बेच देते थे ?

(3) सदानंद ने शादीराम को पुरानी पत्रिकाओं से क्या करने की सलाह दी ?

(4) लाला सदानंद की बीमारी के समय पंडित शादीराम किस तरह सेवा करते थे ?

(5) 'अलबम सेठ से मैंने मँगवा लिया है ।' - ऐसा सदानंद ने शादीराम से क्यों कहा ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) पंडित शादीराम कर्ज अदा करने के लिए क्यों बेचैन थे ?

(2) लाला सदानंद ने शादीराम की समस्या का क्या हल निकाला ?

(3) शादीराम ने अपना कर्ज कैसे चुकाया ?

(4) पंडित शादीराम लाला सदानंद से यह क्यों न कह सके कि वे झूठ बोल रहे हैं ?

(5) शादीराम का ऋण उतरने की बजाय दुगुना क्यों हो गया ?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के चार-पाँच वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) पंडित शादीराम के दिल में क्यों शांति नहीं थी ?

(2) पंडित शादीराम खुशी से क्यों झूमने लगा ?

(3) लाला सदानंद ने शादीराम से रुपये लेने से मना क्यों दिया ?

(4) लाला सदानंद के चरित्र पर अपने विचार स्पष्ट कीजिए ।

5. सूचनानुसार लिखिए :

(1) **पर्यायवाची शब्द दीजिए :** हाथ, आँख, ऋण, अंधकार, परमात्मा

(2) **विलोम (विरोधी) शब्द दीजिए :** ठंडी, परवाह, सज्जन, जीवित, निराशा, सफल, दया

(3) **निम्नलिखित वाक्यों में से भाववाचक संज्ञा खोजकर बताइए :**

(1) लाला सदानंद पंडितजी की विवशता को जानते थे, परंतु भलमनसी के सामने आँखें नहीं उठती थीं ।

(2) पंडित शादीराम को अब कोई आशा नहीं थी ।

(3) आपने जो दया और सज्जनता दिखाई है, उसमें मरते दम तक न भूलूँगा ।

(4) आप झूठ बोल रहे हैं ।

(4) **मुहावरों के अर्थ देकर वाक्य-प्रयोग कीजिए :**

(1) ठंडी आह भरना

(2) पेट काट कर बचाना

(3) भार उतारना

योग्यता-विस्तार

- अपने मित्र को उधार पैसे दिए और अब मित्रता ही नहीं रही - दो मित्रों के बीच उसकी संवाद में प्रस्तुति करवाइए ।
- 'हम अत्याचार का सामना सिर उठाकर कर सकते हैं, परन्तु भलमनसी के सामने आँख नहीं उठती ।' का आशय स्पष्ट कीजिए ।

शिक्षण-प्रवृत्ति

- मानव मूल्यों के जतन करने के प्रति छात्रों को जागरुक कीजिए ।
- स्वातंत्र्य सेनानियों का तथा प्रसिद्ध खिलाड़ियों के अलबम तैयार करवाइए ।

●